नाम - प्रो॰ भूपेन्द्र कुमार दुबे

महाविद्यालय - दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

संकाय - कला

पदनाम - सहायक प्राध्यापक (भूगोल विभाग)

विषय - भूगोल

शीर्षक - " भूगोल में चिंतनफलक "
(Paradigms in Geography)

Scanned with OKEN Scanner

भूगोल में चिन्तनफलक
(Paradigms in Geography)

प्रस्तावना (Introduction):-

इस प्रकरण का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक भूगोल की परिवर्तनशील रूपरेखा प्रस्तुत करना है। वैज्ञानिक भूगोल की अपनी एक सुनिश्चित परिभाषा तथा उसका विधितंत्र होता है। उसके अनुसंधान प्रश्न भूगोलवेत्ताओं में सहमति से सुपरिचित होते है। ऐसे भूगोल का प्रारम्भ "1859" से हुआ।

अमेरिकी "टोमस एस० कून "(Thomas S. Kuhn) विज्ञानो का इतिहासकार है जिसने The Structure of Scientific Revolutions, 1962, 1970 में "विज्ञानों के विकास का सिद्धान्त" पुस्तक प्रकाशित की जिसमें उसने बताया कि विज्ञान निरन्तर और नियमित रूप से विकसित नही होते वरन् पेराडाइम (Paradigm) तथा क्राइसिस (Crisis) से गुजरकर विकसित होते है, (Kuhn, 1962, 1970)। पेराडाइम किसी विज्ञान के इतिहास मे वह सापेक्षिक शांत समय-अवधि होती है। जब विषय के वैज्ञानिको को सामान्य स्वीकृति वाली अनुसंधान समस्यायें विधितंत्र एवं समाधान उपलब्ध होते है तथा जिनके अन्तर्गत वे अपने विषय के वैज्ञानिक कार्य में संतुष्टि के साथ संलग्न होते है।

यह विषय की वैज्ञानिक समस्याओ एवं उन पर अनुसंधान विधि का उपयोग या ऐसा ढाँचा है जिसके अन्तर्गत किये गये कार्य वे ही

विषय के वैज्ञानिक समुदाय में स्वीकृति मिलती है और इसे ही उस विषय का "नॉर्मल (Normal) विज्ञान" समझा जाता है। इस "नॉर्मल" विज्ञान से वैज्ञानिकों या उनके एक समूह में असन्तुष्टि उत्पन्न हो सकती है जो प्रचलित पैराडाइम से भिन्न एवं उच्चतर अनुसंधान प्रश्नों एवं विधियों/उपागमों को बेहतर समझते हैं। यह क्राइसिस (crisis) की अवस्था है। कुछ समय बाद प्रचलित पैराडाइम से कुछ भिन्न या बिल्कुल नया पैराडाइम चलन में आता है, तथा अपनी समय-अवधि, छोटी या लम्बी, तब प्रचलित रहता है। यह पैराडाइम विषय की परिभाषा उसके अनुसंधान समस्याओं, उनके उपागम एवं विधियों में पहले से उच्चतर होती/समझी जाती है। यही विज्ञान की प्रगति की विधि है तथा यह क्रम कई पैराडाइम तथा क्राइसिस से गुजरता है।

कुन ने अपने पैराडाइम के सिद्धांत में किसी भी विज्ञान की 6 अवस्थायें (Phases) बताई हैं—

(i) पूर्व पैराडाइम अवस्था में विज्ञान दार्शनिक विचारों के क्षेत्र में अधिक सम्बद्ध अध्ययन अवस्था में आता है; विचारों में विविधता होती है तथा जानकारी का भारी संकलन होता रहता है लेकिन विशेषीकरण का निम्न स्तर होता है।

(ii) व्यावसायिक दक्षता (Professionalism) अवस्था में विषय सुपरिभाषित होता है तथा कोई एक विचारधारा अन्य से अधिक प्रखर हो जाती है। वैज्ञानिक अपने कार्य में अधिक दक्ष होते हैं।

(III) पैराडाइम अवस्था में समस्या क्षेत्र स्पष्ट होता है तथा अधिकांश वैज्ञानिक इसके लिये सहमत होते है। यह पैराडाइम सामान्य विज्ञान (Normal Science) बन जाता है।

(IV) समस्या समाधान (Puzzle-solving) अवस्था में विधितंत्र के स्थान पर अनुसंधान समस्या /प्रश्न सुलझाने के परिणामों (जो कि पुर्वानुमानित - Anticipated) होते है। इसका मूल्यांकन /सत्यापन होता है तथा आँकड़े अपेक्षित परिणाम के अनुकूल एकत्रित होते है। किसी भी भिन्न / अपवादी कार्य का विरोध होता है।

(V) क्राइसिस (Crisis) अवस्था में इतने प्रश्न एकत्रित हो जाते हैं, जिनके उत्तर प्रचलित पैराडाइम में नहीं होते है या पहले पैराडाइम से बेमेल नये सिद्धांत (Theory) बन जाते है। यह अवस्था पुराने पैराडाइम से कुछ समय और चलने (जब कोई नये रास्ते न निकल रहे हों) या नये पैराडाइम की स्थापना से समाप्त हो जाता है।

(VI) क्रांतिकारी अवस्था (Revolutionary phase) नये पैराडाइम की स्वीकृति पर प्रारम्भ होता है तथा पुरानी व्याख्यायें एवं विधियाँ बदल सकती है। कुन का पैराडाइम सिद्धांत किसी विज्ञान के विकास को समझने के लिये एक उपयोगी ढाँचा देता है, यद्यपि पूर्ण व्याख्या में सफल नहीं है। कुन की शिक्षा भौतिकी में हुई थी तथा यह सिद्धांत भौतिकी के विकास पर आधारित है (Hold-Jenson, 1981)।

Scanned with OKEN Scanner

(III) पैराडाइम अवस्था में समस्या क्षेत्र स्पष्ट होता है तथा अधिकांश वैज्ञानिक इसके लिये सहमत होते है। यह पैराडाइम सामान्य विज्ञान (Normal Science) बन जाता है।

(IV) समस्या समाधान (Puzzle-solving) अवस्था में विधितंत्र के स्थान पर अनुसंधान समस्या /प्रश्न सुलझाने के परिणामों (जो कि पुर्वानुमानित - Anticipated) होते है। इसका मूल्यांकन /सत्यापन होता है तथा आँकड़े अपेक्षित परिणाम के अनुकूल एकत्रित होते है। किसी भी भिन्न / अपवादी कार्य का विरोध होता है।

(V) क्राइसिस (Crisis) अवस्था में इतने प्रश्न एकत्रित हो जाते हैं, जिनके उत्तर प्रचलित पैराडाइम में नही होते है या पहले पैराडाइम से बेमेल नये सिद्धांत (Theory) बन जाते है। यह अवस्था पुराने पैराडाइम से कुछ समय और चलने (जब कोई नये रास्ते न निकल रहे हों) या नये पैराडाइम की स्थापना से समाप्त हो जाता है।

(VI) क्रांतिकारी अवस्था (Revolutionary phase) नये पैराडाइम की स्वीकृति पर प्रारम्भ होता है तथा पुरानी व्याख्यायें एवं विधियाँ बदल सकती है। कुन का पैराडाइम सिद्धांत किसी विज्ञान के विकास को समझने के लिये एक उपयोगी ढाँचा देता है, यद्यपि पूर्ण व्याख्या मे सफल नही है। कुन की शिक्षा भौतिकी में हुई थी तथा यह सिद्धांत भौतिकी के विकास पर आधारित है (Holt-Jensen, 1981)।

कून के सिद्धांत के अनुरूप भूगोल के चिन्तनफलक

(PARADIGMS IN GEOGRAPHY IN CONFORMITY WITH KUHN'S THEORY)

गुनार हैनरिकसन (नॉर्वे) ने Metageographic Analysis, 1973 में कुन के विज्ञान के विकास के सिद्धांत का भौगोलिक अर्थनिर्णय (interpretation) प्रस्तुत किया। इसे आधार बनाकर भूगोल के चिंतनफलकों का क्रमिक इतिहास वर्तमान समय (2010) तक बताया जा सकता है।

मोटे अंक पैराडाइम को प्रदर्शित करते हैं। दिये गये वर्षों की सीमा केवल संकेतात्मक है क्योंकि परिवर्तन किसी एक वर्ष में घटित नहीं होते। वर्षों को विभिन्न कालों की सीमा के रूप में देना इसलिये उचित समझा गया है कि भूगोल के इतिहास को जानने में इच्छुक व्यक्ति (पाठक), उसके चिन्तन में आये परिवर्तनों के वर्षों को तलाश करता है तथा काल-सीमा के द्वारा ही उन्हें सरलता से समझ सकता है। लेकिन ये सीमा के वर्ष (years of boundaries) अन्तिम एवं निर्विवाद नहीं हो सकते यद्यपि उनका चुनाव पर्याप्त विचार के बाद किया गया है। भूगोल के इस वैचारिक चिन्तन परिवर्तन काल की दोनों ओर की सीमायें दूसरे काल की सीमाओं से अध्यारोपित होती ही है। इसीलिये कुछ पैराडाइम क्राइसिस के बाद भी ग्राफ की पैराडाइम की रेखा दी गई है।

पैराडाइम तथा क्राइसिस के संकेतक वर्षों की क्रान्तिक परिवर्तन वाली भौगोलिक घटनायें निम्नलिखित हैं—

1820 विश्व में भूगोल के पहले प्रोफेसर कार्ल रिटर की बर्लिन विश्वविद्यालय में नियुक्ति।

1859 चार्ल्स डार्विन (उद्विकास का पूर्ण परिवर्तनकारी सिद्धांत) की "ऑरिजिन ऑफ स्पेशीज" का प्रकाशन तथा रिटर और हम्बोल्ट की मृत्यु

1870 पैंगेल (मौलिक भूगोल का जनक) की "मार्फोलॉजी ऑफ अर्थस सरफेस" का प्रकाशन।

1891 रैटज़ेल की "एन्थ्रोपोजियोग्राफी" का खण्ड II जो मानव एवं उसके कार्यों का पहले विवरण देता है तथा उसके बाद प्राकृतिक पर्यावरण की उनको ढालने में भूमिका बताता है।

1903 पॉल विडाल डी॰ ला ब्लॉश की प्रसिद्ध प्रदेश उद्विकास की पुस्तक "तैबल्यू दी ला जियोग्राफी दी ला फ्रांस" फ्रांस के प्रादेशिक भूगोल का उद्विकास का प्रकाशन

1924 वाल्टर पेंक का अपरदन चक्र — The Morphological Analysis of Land forms, 1924 (भूआकृतियों का आकारिकी विश्लेषण)।

1925 कार्ल सार की "दी मार्फोलॉजी आफ लैण्डस्केप" का प्रकाशन।

1927 हैटनर की Geography: Its History, its character and its Methods का प्रकाशन।

1945 द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति।

1953 शेफर - हार्टशोर्न वाद - विवाद का प्रारंभ; शेफर के पेपर "एक्सैप्शनलिज्म इन ज्योग्राफी" में मात्रात्मक क्रांति के पक्ष में कारण बताना।

1955 मात्रात्मक क्रांति के सैद्धान्तिक भूगोल का प्रारंभ।

1969 मात्रात्मक क्रांति की समाप्ति, डेविड हार्वे की Explanations is Geography (भूगोल में व्याख्याये) का प्रकाशन।

1973 आर. जे॰ चार्ली की Directions in Geography का प्रकाशन।

1974 सैद्धान्तिक भूगोल की आलोचना तथा मानववाद का प्रारम्भ "यी-फू-तुआन" Space and Place Humanistic perspective" लेख का प्रकाशन।

1990 कल्याण भूगोल तथा क्रान्तिकारी भूगोल का एकीकरण मानववादी तथा मार्क्सवादी भूगोल का तथा सभी भौगोलिक परम्पराओ का संगम/ फ्यूजन।

PARADIGMS IN GEOGRAPHY

graph constructed on the basis of Henriksen's (1973) interpretation of Kuhn's theory extended by author till present (2010)

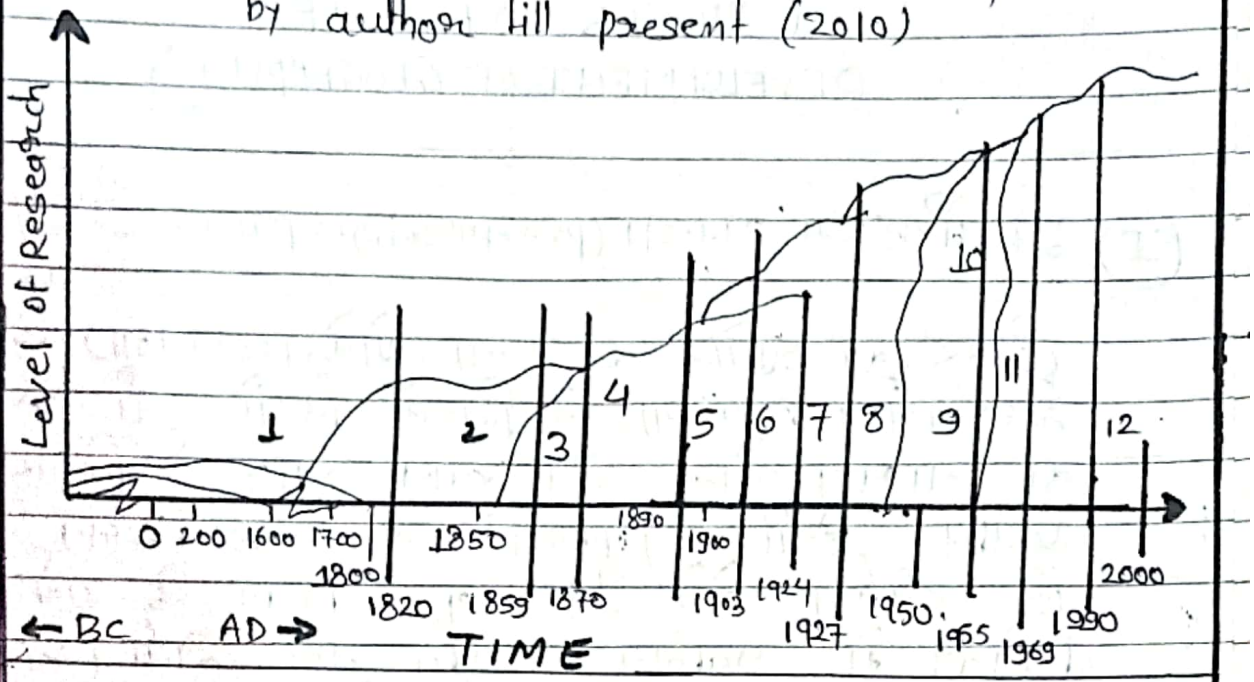

PHASE OF DEVELOPMENT

1. pre-paradigm (<1820)
2. professionalism (1820-1859)
3. crisis (with revolution 1859-1870)
4. Geomorphology/Determinism paradigm (1870-1924)
5. crisis (1891-1903)
6. Regional Geography/possibilism (1903-1927)
7. crisis (1927-1930)
8. Areal Differentiations/Regions (1930-1945)
9. crisis (with revolution 1945-53)
10. Theoretical Geography paradigm (1955-1969)
11. crisis and orientation toward Man & values (1973-1989)
12. critical paradigm and post-modernism (1990-present)

1. पूर्व पैराडाइम 1820 से पूर्व
2. प्रोफेशनलिज्म (1820-1859)
3. क्राइसिस (आमूल परिवर्तन) 1859-1870
4. भूआकृति विज्ञान/निश्चयवाद (1870-1924)
5. क्राइसिस (1891-1903)
6. फ्रांसीसी प्रादेशिक भूगोल/संभववाद (1903-1927)
7. क्राइसिस (1927-1930)
8. क्षेत्रीय विभेदन/प्रदेश (1930-1945)
9. क्राइसिस (1945-1953)
10. सैद्धांतिक भूगोल पैराडाइम (1955-69)
11. क्राइसिस एवं मानव तथा मूल्यों की ओर उन्मुख भूगोल तथा क्रिटिकल क्रांति (1973-1989)
12. क्राइसिस तथा उत्तर आधुनिक भूगोल (1990-वर्तमानतक)

चित्र:- भूगोल का विकास- अवस्थायें

भूगोल के विकास की अवस्थाये

(PHASES OF THE DEVELOPMENT OF GEOGRAPHY)

(I) पूर्व पैराडाइम अवस्था (Pre-paradigm phase):-

यह 1820 (रिटर का भूगोल का पहला प्रोफेसर बनना) से पूर्व दीर्घकालीन अवस्था है जिसमे किसी भी पैराडाइम का आभाव होता है। साथ-साथ कई विचारधाराये प्रचलित होती है। विचारो के आदान-प्रदान के माध्यम एंव सीमित होते है। साथ ही विषय के अर्थ एंव विधितंत्र में प्रचलित सहमति नहीं होती। भूगोल मे यह अवस्था 1820 से पूर्व थी। इस अवस्था मे एक वक्र आगे तक प्रसारित होता है लेकिन साथ ही कुछ उभरते तथा गिरते वक्र है जो अलग-अलग विचारधाराओ के अस्तित्व को प्रदर्शित करते है।

(II) व्यावसायीकरण अवस्था (Professionalism Phase):-

यह अवस्था 1820 से 1859 तक के करीब 40 वर्षों की है जो रिटर द्वारा पेशेवर वैज्ञानिक रूप में भूगोल के विकास करने का काल है। यद्यपि यह कार्य हम्बोल्ट का भी था लेकिन वह पेशेवर (Professional) भूगोलवेत्ता ना होकर शौकिया (Amateur) भूगोल वेत्ता था। रिटर ने एक दक्ष व्यावसायिक भूगोलवेत्ता के कार्य किये। उसने भूगोल के सुनिश्चित अर्थ बताये तथा उसकी विधियों को स्पष्ट किया। हम्बोल्ट के Erdbeschreibung पृथ्वी वर्णन को उसने Erdkunde

"पृथ्वी-विज्ञान बनाया" जिसके द्वारा उसने ऐसा "नया वैज्ञानिक भूगोल" बनाया, जो केवल विशद वर्णन न करे बल्कि स्थानिक व्यवस्था में पृथ्वी की सतह पर तत्वों के पारस्परिक संबंध एवं उनके कारणों के नियम Law बनाये। पर्यवेक्षण एवं आगमनिक विधि से भूगोल में नियम बनाये, जिन्हें एक ही तत्व या घटना के अलग-अलग कई पर्यवेक्षणों से प्राप्त किया जाता है।

उसने भूगोल को पृथ्वी का ऐसा विज्ञान बनाया जो प्रकृति तथा मानवभाग के इतिहास का संबंध स्थापित करे। इसी को सामान्य तुलनात्मक भूगोल भी कहता है जो भौतिक एवं ऐतिहासिक विज्ञानों के अध्ययन एवं शिक्षण के लिये ठोस आधार बनाये।

(iii) भू आकृति विज्ञान एवं निश्चयवाद (Geomorphology and Determinism):-

भूगोल के विकास की पहली अवस्था 1859 रिटर की मृत्यु के साथ समाप्त हो गयी। लेकिन उसी वर्ष डार्विन की The origin of species, (1859) प्रकाशित हुई। इसमें विज्ञान की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाला उद्विकास सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस सिद्धांत में पहली बार सशक्त रूप से यह प्रमाणित किया गया कि सांस्कृतिक विकास या मानव इतिहास की शक्तियाँ "प्राकृतिक होती है ईश्वर-उद्देश्यवादी नहीं।"

(IV) फ्रांसीसी प्रादेशिक भूगोल तथा संभववाद
(French regional Geography and possibilism):-

निश्चयवाद अधिक समय तक स्वीकार्य नहीं रहा क्योंकि स्वयं रैत्जेल के Anthropogeographie के दूसरे खण्ड (1891) जनसंख्या के तथ्यों को सतह पर सांद्रण एवं वितरण, अधिवासों के आकारों तथा प्रवास (migration) जैसे मानव संबंधी तत्वों को प्राथमिकता एवं महत्व दिया। उसने मानव समुदायों के लक्षणों के बनने में उनके इतिहास तथा संस्कृति को भी महत्व दिया।

(V) क्षेत्रीय विभेदन तथा क्षेत्रविज्ञानी प्रदेश:
(Areal differentiation and chorological regions):-

1920 के दशक से ही भूगोल मानव पर्यावरण अध्ययन का विषय है - इस पैराडाइम पर असन्तोष व्यक्त करने वाले प्रश्न उठने लगे। निश्चयवाद मृतप्राय: अस्वीकार हो चुका था तथा संभववाद का सुनिश्चित सिद्धांत नहीं था जिसके अनुरूप भौगोलिक कार्य होते। फलस्वरूप सार - हैटनर - हार्टशोर्न के चिंतन ने भूगोल को 1930 के दशक से दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति (1945) तक क्षेत्रीय विभेदन का क्षेत्रविज्ञानी प्रदेश के अध्ययन का विषय बना दिया। इस पैराडाइम में विशिष्ट प्रदेशों का सामान्य भौगोलिक नियमों के दृष्टांतों के रूप में अध्ययन किया जाता है।